

# Christmas Puja

Date : 25th December 1997  
Place : Ganapatipule  
Type : Puja  
Speech : Hindi & English  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 06
English	07 - 11
Marathi	-

### II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	12 - 14

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

आज हम लोग यहाँ ईसा मसीह का जन्म दिन मनाने के लिए उपस्थित हुए हैं।

ईसा मसीह की जिन्दगी बहुत छोटी थी और अधिक काल उन्होंने हिन्दुस्तान में ही बिताया-काश्मीर में। सिर्फ आखिरी तीन साल के लिए वापिस गए और लोगों ने उन्हें सूली पर टाँग दिया। यह सब कुछ विधि का लिखा हुआ था। आज्ञा चक्र को खोलने के लिए उन्हें ये बलिदान देना पड़ा और इस तरह से उन्होंने आज्ञा चक्र की व्यवस्था की। आज्ञा चक्र बहुत संकीर्ण है, छोटा सा, और आसानी से खुलने वाला नहीं। क्योंकि मनुष्य में जो स्वतंत्रता आ गई उससे वो अहंकारी बन गया। इस अहंकार ने उसका आज्ञा चक्र बंद कर दिया और उस बंद आज्ञा चक्र से निकलने के लिए अहंकार निकालना बहुत ज़रूरी है और अहंकार निकालने के लिए आपको अपने मन को काबू करना पड़ता है। लेकिन आप मन से अहंकार नहीं निकाल सकते। जैसे ही आप मन से अहंकार निकालने का प्रयत्न करेंगे, वैसे ही मन बढ़ता जाएगा और अहंकार बढ़ता जाएगा। “अहं करोति सः अहंकारः”। हम करेंगे, इसका मतलब कि अगर हम अपने अहंकार को कम करने की कोशिश करें, तो अहंकार बढ़ेगा क्योंकि हम अहंकार से ही कोशिश करते हैं। जो लोग यह सोचते हैं कि हम अपने अहंकार को दबा लेंगे, खाना कम खाएंगे, दुनिया भर के उपद्रव, एक पैर पर खड़े हैं, तो कोई सिर के बल खड़ा है! हर तरह के प्रयोग लोग करते हैं अपने अहंकार को नष्ट करने के लिए। लेकिन इससे अहंकार नष्ट नहीं होता, इससे बढ़ता है। उपवास करना, जप-तप करना आदि सब चीज़ों से अहंकार बढ़ता है। हवन से भी अहंकार बढ़ता है क्योंकि अग्नि जो है वो दायें तरफ है।

जो कुछ भी हम कर्मकाण्ड करते हैं, रिच्युअल्स करते हैं, उससे अहंकार बढ़ता है और मनुष्य सोचता है कि हम सब ठीक हैं। हजारों वर्ष से वही-वही कर्म काण्ड करते जाते हैं और उल्टा-सीधा सब मामला जो भी सिखाया गया, वही मनुष्य कर रहा है। इसीलिए सहजयोग कर्मकाण्ड के विरोध में है। कोई भी कर्मकाण्ड करने की ज़रूरत नहीं और अतिशयता पर पहुँचना तो और गलत बात है। जैसे हम ने कहा कि अपने अहंकार को निकालने के लिए आप उसको, मराठी में ‘जोडेप्रट्टी’ कहते हैं, जूते मारिए, तो रोज सवेरे सहजयोगी जूते ले कर चले लाइन में। अरे अगर आप के अंदर अहंकार हो तब। हरएक आदमी हाथ में जूता लिए चला जा रहा है रास्ते में। यह सब कर्मकाण्ड सहजयोग में भी बहुत घुस गए हैं। यहाँ तक कि फ्रांस से भी एक साहब आए थे, वो वाशी के अस्पताल से कर्मकाण्ड ले कर आए। अरे बाबा, यह तो बीमारों के लिए है। आप को अगर यह बीमारी हो तो आप यह कर्मकाण्ड करो। जो कैंसर की बीमारी के कर्मकाण्ड हैं, वो भी उसने लिख रखे थे। मैंने कहा कि मनुष्य का स्वभाव है कि कर्मकाण्ड करे। क्योंकि वो सोचता है मैं कर सकता हूँ। मेरे कर्मकाण्ड से कार्य होगा और इस कर्मकाण्ड में सिर्फ आप ही लोग नहीं हो, परदेस में भी बहुत से लोग कर्मकाण्ड करते रहते हैं। तरह-तरह के। जैसे साल भर में एक बार चर्च को जाएंगे, माने आज के दिन। उसके बाद भगवान का नाम भी नहीं लेंगे। दुनिया भर के गंदे काम कर के कैथोलिक धर्म में जाकर के वो कन्फेशन कर लेंगे। यह सब मूर्खता अगर आप देख सके तो आप

सहजयोगी हो गए। अगर आप समझ सके कि यह सब गलत काम जो हमने किया, यह गलत है और अब से आगे यह काम नहीं करने का, यह अगर आपकी समझ में जाए तो यह बात आपकी समझ में आ जाएगी।

अब कर्मकाण्डी लोगों में और भी विशेषताएं होती हैं। एक तो वो एक नम्बर के कंजूस होते हैं। अगर आप उनसे दस रुपए की बात करे तो वे आकाश में कूदने लग जाते हैं। उसको मराठी में 'कौड़ी चुम्बक' कहते हैं। एक बात है। मराठी में ऐसे-ऐसे शब्द हैं जिनसे आपका अहंकार वैसे ही उतर जाए। जैसे कि कोई अपनी बहुत बड़ी-बड़ी बातें बताने लगे कि मैंने ये किया, मैंने वो किया, तो उसको धीमे से कह दीजिए कि तुम तो चने के पेड़ पर चढ़ रहे हो। चने का पेड़ तो होता नहीं। तो वो ठंडा हो जाएगा। मैंने ये किया, मैंने वो किया। 'मैं', जब तक ये 'मैं' नहीं छूटता, तब तक हमारा ईसा मसीह को मानना गलत है। पर आश्चर्य की बात है जिनको ईसाई राष्ट्र कहते हैं उनसे ज्यादा अहंकारी तो मैंने देखे नहीं। विशेषकर अंग्रेज़, अमरीकी, सब लोगों में इस कदर अहंकार है कि समझ में नहीं आता कि ईसा-मसीह के ये कैसे शिष्य हैं! अब इस अहंकार का इलाज क्या है? वो सोचना चाहिए। इसका इलाज ईसा-मसीह थे और उन्होंने सिखाया है कि आप सबसे प्रेम करें। अपने दुश्मनों से भी प्यार करें। इस का इलाज उन्होंने प्यार बताया है और प्यार के अलावा कोई इलाज नहीं और ये प्यार परम चैतन्य का प्यार है। उन्होंने साफ-साफ कहा कि आप को खोजो, दरवाज़े खटखटाओ, तो दरवाज़ा खुल जाएगा। इस का अर्थ यह नहीं कि तुम जाकर के दरवाज़े खटखटाओ। इस का मतलब यह है कि अपने दिल के दरवाज़ों को खोलिए।

जिस आदमी का दिल छोटा होता है, जो कंजूस होता है वो आदमी कभी भी सहजयोगी नहीं बन सकता और दूसरी चीज़ जो बहुत ज़रूरी है वो ये है कि आपको यदि गुस्सा आता है तो इस का अर्थ है कि आपके अन्दर अभी बहुत अहंकार है। मैंने देखी है गुस्से वालों की स्थिति, विस्फोटक और उससे उन्हें शान महसूस होती। बहुत शान से कहते हैं, मैं बहुत गुस्से वाला हूँ। ऐसे लोग सहजयोग में नहीं रह सकते। जो लोग प्रेम करना जानते हैं और वह भी विशुद्ध प्रेम, ऐसा प्रेम जिसमें कोई आकांक्षा नहीं, कोई इच्छा नहीं। पूर्णतया निरिच्छ जो लोग प्रेम करना जानते हैं, वही सहजयोग में रह सकते हैं। अहंकारी लोग बहुत गलत-सलत कार्य करते हैं। और मैं उनसे तंग आ गई हूँ। अपने ही मन से कुछ शुरू कर देंगे और मुझे बताएंगे भी नहीं। ऐसा करने से आज हज़ारों प्रश्न पैदा हो गए हैं।

आज बताने की बात है दिल्ली में इन्होंने मुझसे एक बार एक पूजा के दिन हड़बड़ी में आकर बताया कि हमें ज़मीन मिल रही है, बस। उससे कितना पैसा लिया, सब कैसे होने वाला है, ज़मीन कैसी है, कुछ नहीं बताया और किसी भी सहजयोगी ने नहीं बताया। क्योंकि कल यदि कोई कहे कि श्री माताजी ने ऐसा कहा है, तो उस आदमी को आप बिल्कुल छोड़ दीजिए। मुझे कुछ कहना है तो मैं स्वयं कहूँगी। उसके बाद इतनी मीटिंग्स हो गईं, मुझे कभी कुछ नहीं कहा। अब जिन्होंने उन्हें पैसा दिया, सिर पकड़ के बैठे हैं कि उन्हें ठगा गया है। अब ये पैसा कैसे वापिस मिलेगा? मुझसे बगैर पूछे सारे काम हो गए, बिल्कुल बगैर पूछे। अब वो इतनी खराब ज़मीन है कि अब नोटिस आया है कि आप उस पर कुछ भी नहीं बना सकते, उल्टे आपको हम पकड़ेंगे। हर एक सहजयोगी को अधिकार है कि मुझे आकर बताए और मुझसे पूछे। उन्होंने कोई अपनी एक सोसायटी बना ली और हो गए पागल कि ज़मीन मिल रही है न। इतनी खराब ज़मीन है कि बताते हैं वहाँ मुर्गी भी नहीं पाल सकते। सहजयोगी क्या मुर्गियों से भी गए बीते हैं? अब जो भी हुआ, सो मूर्खता है और उसके लिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ। लेकिन आप लोग अपने पैसे वापिस

माँग लीजिए। मेरी उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं है।

ईसा-मसीह ने तो यहाँ तक कहा था कि जो लोग घर में रहते हैं, उन्हें पक्षियों की ओर देखना चाहिए। वो अपना घरोंदा कितने प्यार से छोटा सा अपने लिए बनाते हैं और जब वो अपना घर बनाते हैं, तो उस घर को बनाने में उन्हें बड़ा मज़ा आता है। हर तरह से उन्होंने समझाया कि आप ममत्व को छोड़ दीजिए। यह मेरा घर है, यह मेरी ज़मीन है, ये मेरे बच्चे हैं। यहाँ तक कि यह मेरा देश है। यह जो ममत्व है, यह छूटना चाहिए, तभी आप महान हो सकते हैं। सारे विश्व में आप भाई-बहिन हैं। इसका मतलब यह नहीं कि आप अपनी देशभक्ति को छोड़ दें। यदि आप देश भक्त नहीं हैं तो आप कुछ भी नहीं कर पाएंगे। आप में देश भक्ति होनी ही चाहिए। लेकिन यही देश-भक्त विश्व-भक्त हो जाता है। अगर देश भक्ति ही नहीं है, जब बूंद ही नहीं है तो सागर कैसे बनेगा? तो प्रथम, आपमें देशभक्ति है या नहीं, यह देखना चाहिए। आप देश के विरोध में यदि कोई कार्य कर रहे हैं तो आप देशभक्त नहीं हैं।

ईसा-मसीह को वापिस जाने की कोई ज़रूरत नहीं थी। उन्होंने कहा भी था कि वहाँ सब ऐसे लोग रहते हैं जिनको सिर्फ मल की इच्छा है। यानि जो म्लेच्छ हैं। लेकिन शालिवाहन ने उनसे कहा, नहीं नहीं, तुम जाओ और उन्हें 'निर्मल तत्त्वम्' सिखाओ। वो सिखाने गए 'निर्मल तत्त्वम्' और उल्टा उन्हें ही सूली पर चढ़ा दिया गया। पागलों का देश, उनसे कुछ सीखने का था ही नहीं, पर सिखाने का था, इसलिए वो गए और इसीलिए उनका अन्त इस प्रकार हुआ।

समझदारी और क्षमा। क्षमा ही मन्त्र है जिससे आज्ञा चक्र खुलता है यदि आपको किसी के भी प्रति कोई गलतफहमी है, किसी के प्रति आपको कोई द्वेष है या किसी के प्रति हिंसा की प्रवृत्ति है तो आप की आज्ञा ठीक नहीं हो सकती। जो भी आप को करना है प्रेम के द्वारा। आपको किसी को कहना भी है तो इस लिए कहना है, कि उस का जीवन निर्मल हो जाए।

इस का अर्थ यह नहीं कि आप अपने बच्चों को खराब करें। बच्चों को आपको पूरी तरह से अनुशासन में लाना है। अगर आप बच्चों को अनुशासन में ला नहीं सकते, तो आपके बच्चे कभी अच्छे सहजयोगी नहीं हो सकते। और उसके लिए पहले आपमें खुद अनुशासन होना चाहिए। यदि आपमें अनुशासन नहीं होगा तो आप बच्चों को अनुशासित नहीं कर सकते।

ईसा-मसीह का जो जीवन था उसके बारे में बहुत कम लिखा गया है। लेकिन उनके अन्दर इतना अनुशासन था, इस कदर उन्होंने सहा और अपने जीवन से उन्होंने दिखा दिया। उनको विवाह की भी ज़रूरत नहीं थी। उन्होंने विवाह नहीं किया। इसका मतलब यह नहीं कि वे विवाह के विरोधी थे। ऐसी गलतफहमी लेकर लोग बैठे हुए हैं और इसी लिए इन्होंने ये महिलाएं बनाई हुई हैं जिन्हें 'नन' कहते हैं। उनकी शादी ईसा से करते हैं जो साक्षात् गणेश हैं। उनसे कैसे शादी कर सकते हैं? उसके अलावा आदमियों को भी शादी नहीं करनी। इस प्रकार की अनैसर्गिक बातें सिखा दी। उससे वो सबको अपने कैज़े में रख सकते हैं। पर उससे ईसाई नहीं हो सकते। इस तरह के कृत्रिम बन्धन अपने ऊपर डाल लेने से आज ईसाई धर्म डूब रहा है। ईसा को उन्होंने भुला दिया और अपने ही मन से एक धर्म उन्होंने बना लिया है और उसको ये ईसाई धर्म कहते हैं। आज कल का ईसाई धर्म ईसा के नाम पर कलंक सा

लगता है। क्योंकि मेरा जन्म ही इस धर्म में हुआ और मैंने इस धर्म की सभी अन्दरूनी बातें देखीं।

उसी प्रकार हिन्दू धर्म की बात है। हिन्दू धर्म में आप साम्प्रदायिक हो ही नहीं सकते, क्योंकि आप के अनेक गुरुओं, वास्तविक गुरुओं, जैसे दत्तात्रेय जी, नाथपंथी आदि आपके अनेक अवतरण हैं, और आपके स्वयंभू अनेक हैं। आपके एक नहीं, अनेक धर्मग्रन्थ हैं। ईसाई लोगों में सिर्फ ईसा और बाइबल। वो रुढ़िवादी हो सकते हैं। मुसलमान हो सकते हैं और यहूदी लोग भी हो सकते हैं और तीनों का आपस में रिश्ता है, ऐसा धर्मग्रन्थों में लिखा है। लेकिन हिन्दू नहीं हो सकता साम्प्रदायिक। क्योंकि किसी का कोई, किसी का कोई। कोई महालक्ष्मी को मानता है, तो कोई रेणुका देवी को मानता है, तो कोई कृष्ण को मानता है। हर आदमी, हर परिवार अलग-अलग अवतरणों को मानते हैं। अलग-अलग धर्मग्रन्थों को मानते हैं। कोई भी ऐसा धर्मग्रन्थ नहीं है जो कि बाइबल जैसा हो। इसलिए सब धर्मों का, एक हिन्दू को चाहिए कि मान करे। मैंने देखा है कि हिन्दुओं में मान करने की शक्ति सब से ज्यादा है।

एक बार हम एक होटल में थे, वहाँ एक बाइबल थी। वो सब मेज़ पर बाइबल रखते थे, चाहे कोई पढ़े या नहीं। वो बाइबल नीचे गिर गया तो हमारे साथ एक हिन्दू थे। उन्होंने उस बाइबल को उठाया सिर पर रखा और फिर मेज़ पर रख दिया। कभी बाइबल को पैर से नहीं छुएंगे। कभी नहीं। ईसाई तो ऐसा कर लेंगे पर हिन्दू नहीं करेगा। सब की इज्जत करना यह हिन्दू का धर्म है। पर उससे आज कल जो लोग निकले हैं अजीबो गरीब, जैसे आज के हमारे राजनीतिज्ञ हैं। बरसात में जैसे मशरूम निकल आती है ऐसे ये लोग निकल आये हैं। ये लोग वास्तव में हिन्दू नहीं हैं। इन्हें अपने धर्म के बारे में कुछ मालूम नहीं। उत्तर भारत के लोगों को कुछ भी मालूम नहीं और जो दक्षिण भारत के लोग हैं, उन्हें तो केवल यही मालूम है, कि ब्राह्मण को यहाँ पैसा देना है वहाँ देना है। ये करना है वो करना है। कर्मकाण्ड के सिवाय इस महाराष्ट्र में और कुछ नहीं। इतने कर्मकाण्डी लोग हैं (मैंने महाराष्ट्र में बहुत मेहनत करी है, सब व्यर्थ गई) कुछ छूट नहीं सकता उनसे। यहाँ एक सिद्धि विनायक का मंदिर है। उसके जो गणेश जी हैं, उनको जागृत मैंने किया। अब देखती क्या हूँ कि वहाँ एक-एक मील की लम्बी कतारें मंगलवार को खड़ी हुई हैं। गणेश जी भी सो गए होंगे। इस कदर कर्मकाण्डी लोग महाराष्ट्र में हैं कि उस कर्मकाण्ड से उनका स्वभाव ज़रा तीखा हो गया है और उत्तर भारत में भी मैंने देखा है कि कुछ लोग कर्मकाण्डी हैं और जो कर्मकाण्डी लोग हैं, उनमें गुस्सा बहुत है। बहुत तेज़ गुस्सा है और जो लोग कर्मकाण्ड में नहीं हैं वो लोग बहुत शांत हैं। सो पहली चीज़ है कि कर्मकाण्ड बंद करो और हर चीज़ का आदर करो। कर्मकाण्ड बंद करने का यह मतलब नहीं कि सबको लात मारकर फेंक दो। यह संतुलन जो है, यही ईसा-मसीह ने सिखाया है। यह संतुलन आए बगैर आपका आज्ञा चक्र नहीं खुल सकता। सबका सम्मान, सबका आदर और बेकार के कर्मकाण्ड जिसमें गलत लोग पनप रहे हैं। आजकल के जो बहुत से झूठे साधु बाबा हैं वे कर्मकाण्ड की वजह से ही हैं। वो कहेंगे कि आप इतने रुपए दो, यह करो, वो करो, यज्ञ करो। एक सौ आठ मर्तबा रोज़ यह नाम लो, वो नाम लो। मंत्र देता हूँ, फलाना करता हूँ। यह सब कर्मकाण्डी हैं और आप लोगों को कर्मकाण्ड सिखाते हैं जिसके पूरी तरह से विरोध में ईसा मसीह थे। क्योंकि वो जानते थे कि कर्मकाण्ड करने से आदमी अहंकारी हो जाते हैं और इस अहंकार को तोड़ने के लिए उन्होंने कर्मकाण्ड को एकदम मना किया था। इसी तरह से परमात्मा के नाम पर कोई भी आदमी पैसा कमाए तो इसके

विरोध में थे। परन्तु इसका उल्टा शुरु हो गया कि पैसा कमाओ और खाओ। कमाना तो नहीं छूटा पर पैसा कमा लो और खा जाओ, खुद जिससे कोई भी कार्य नहीं हो सकता।

आज सहजयोग के कार्य में हमें याद रखना चाहिए कि हमने सहजयोग के कार्य में क्या आर्थिक योगदान दिया। ईसा मसीह के पास तो १२ मछली मार थे। वो तक फैल गए सारी दुनिया में मेहनत करके। आज आप लोग मेरे इतने सारे शिष्य हैं और आप लोग चाहे तो कितने ही लोगों को पार करवा सकते हैं, कितने ही लोगों को सहजयोग में ला सकते हैं। पर लोग आधे-अधूरे नहीं रहने चाहिए बल्कि गहरे उतरने चाहिए। जब तक गहरे नहीं उतरेंगे तब तक आप समझ नहीं पाएंगे और उसके लिए सबसे बड़ी चीज़ है कि हम उनको कितना प्यार देते हैं और वो कितना प्यार दूसरों को देते हैं। कोई भी आदमी जब सहजयोग में अगुआ होता है, तो उसको पहले याद रखना चाहिए कि ईसा-मसीह ने जो देन दी है कि आप सबसे प्यार करो, क्या मैं उसका पालन कर रहा हूँ? मैं सब पर रोब झाड़ता हूँ, मैं सब को ठिकाने लगाता हूँ, सब के ऊपर आँखें निकालता हूँ, यह अहंकार न केवल सहजयोग के विरोध में है बल्कि उसका नाश करने वाला है। जिस आदमी में भी अहंकार हो, वह उसे कम करे और उस की जगह प्यार से भरे तो जीवन सुखमय हो जाएगा, जीवन सुन्दर हो जाएगा। जीवन सुन्दर हो जाएगा। यदि आप को प्यार करना नहीं आता तो थोड़े दिन आप सहजयोग से बाहर रहें। पहले अपने हृदय के दरवाज़े खोलें। उसी की शक्ति से सहजयोग फैलेगा। बात यह है कि जो लोग सहजयोग फैलाते हैं उनमें प्यार की शक्ति कम और गुस्से की शक्ति ज्यादा है। कभी नहीं फैलेगा। प्यार से बढ़ेगा और गुस्से से घटेगा और नष्ट हो जाएगा। जो ईसा मसीह की सीख है वो बहुत ज़रूरी है कि हम लोग समझ लें।

परमात्मा आपको धन्य करें।



# ORIGINAL TRANSCRIPT

## ENGLISH TALK

(After Hindi Talk)

I'm sorry I had to talk in Hindi language because most of the people are here Indians, some of them are Marathis and others are from the north India.

I was telling them about Christ. What was His power? His power was of love and not of anger, because He is the One Who has crossed the most difficult center of Agnya.

Those people who have ego, never realize they have ego. With their ego they do all kinds of nonsensical things. Without asking Me they have done something in Delhi, without asking Me they have done something in Russia, and it's so destructive to Sahaja Yoga, that they don't realize what they have done is a crime which is punishable by all divine laws.

If you want to do anything you must tell Me beforehand, you must consult Me, you must talk to Me because I know what is happening. You don't know. If somebody wants to cheat you, then how will you know? If you were so sensitive, you would find out. You would have asked Me, "Mother, what should we do?" At least ask Me. This is the main thing missing among Sahaja Yogis now, that we have a kind of a very subtle ego. If you make somebody a leader, it's very dangerous sometimes if the leader develops ego because of his wife. It's a very difficult thing. They can destroy Sahaja Yoga completely. Anything is possible.

So before you do anything like that, you have to consult. I'm still living, and you can ask, you can write to Me, you can telephone too. At least I'm there to tell you. But then, you have to develop your balance and your love. That is only through this Paramachaitanya, with this All-Pervading Power of Divine Love, you can develop that discretion, you can develop that special powers. Even if somebody telephones to Me, immediately I know what's wrong with the person. I don't say that you can become like Me, but at least you have vibrations to see. Also see your own vibrations. How are you moving? Put a paper on your hand and you'll see it will start shaking before My photograph. With this ego you cannot go further. Why did you come to Sahaja Yoga? You came here, not to become some sort of a leader or some sort of a king, but you came here to become a great Guru, as you asked Me, Gurupad Dijiye. For that you have to have in Sahaja Yoga a complete humility, natural humility, natural balance. This is what Christ has taught us.

At that time, I don't think people had that much ego. Ego is a modern present to you. People get ego out of anything. For example, I met one lady once and found her ego very bad. I said, "What's the matter with her?" So I asked my daughters, "What does she do?" They said, "Mummy, she knows how to make dolls." For that she had ego. What is so great than to be a good Sahaja Yogi? You may be the king, you may be anything. Now you see the Prime Ministers and all of them going to jail. What are they compared to you? They have no balance, they have no sense. What makes you as separate individuals, higher people, because you have no ego.

Now people try to remove their ego. There two types. So they will go on beating themselves with shoes. All kinds of ritualistic things they do to remove their ego. But all this you do with your mind, whatever you do with your mind will give you ego only. They become ascetic. They are the greatest egoists. I must say Hitler was the greatest ascetic. With his asceticism he became Hitler. If you want to become Hitler you become ascetic. In Sahaja Yoga you are not allowed at all, all this asceticism.

You have to be loving, affectionate, kind and disciplined. I must say this because when you are loving, you go out of bounds sometimes because you have no discipline of Sahaja Yoga. Loving doesn't mean that you become like Romeo and Juliet. It doesn't mean that. You must have your

balance, through your discipline. If you have no discipline, you can never be a good Sahaja Yogi. From the life of Christ, we have to learn these things that unless and until we have these things we cannot become good Sahaja Yogis.

Firstly ritualistic nature, secondly anger, thirdly miserliness. Like if you go to England, it's written there: "Save pounds by taking a taxi." This is what it is, miserliness. "Where can we save money? Mother, can You give concession?" It's not some sort of a business I'm doing here. "If you make it half price, so many will come." I'm not using your money. I'm using it for your buildings, all this I've got it, of course My money also and your money. So many things I've done; the whole of Vashi, the whole of ashram, in Delhi two ashrams, then the whole of school, and also land in Pune and other places.

Now in Pune they want Me to pay the land, to pay for everything, and Pune people are the known Maharastrians to be great, miserly, kanjoos people. Even for their own Ashram, they would like Me to pay for everything, and then nicely go and sing bhajans nicely. See they are good musicians, that's what they are, but very, very miserly people. Miserly people can never love. They love money. Egoistical people can never love, because they love power, to control others. They think they are doing it for Sahaja Yoga, but not. Unless until you do something for yourself and your ego, no use working for Sahaja Yoga. Look at the Christ. He took birth, in a very humble, abode. But He was the King. And He lived with the poor, and tried to save them. He saved the lepers, He saved so many people, there were twenty-one people were cured by Him.

Now Sahaja Yoga I don't know how many thousands have been cured. But what is important is, if you are curing, know that you are not curing: it is the divine power, that is curing. You are not doing anything. It's best to be like that. I feel the same way, I'm doing nothing, and I'm Niskkriya, doing nothing, but I'm not lazy. You should be active but all your activity should come from the divine power of love. First of all, you must extend your hands for love. You extend your heart, extend your money, house, everything, for love. Now if your wife doesn't allow others to come in the house, throw her out of the house, I don't mind. Teach her, how to be kind and generous, other way round for the husband. It's very important, you have to be generous; you have to be kind, you have to be loving, and sweet to others.

Christ only once went into temper, which He had a right to do that, when He saw people selling things in the temple. Same thing we have here and if you don't go and buy anything from them, they'll be lost. But you only go and buy things from them because you have a habit of shopping. Anywhere they, people go, they must shop. It's a habit, shopping they must do. They will not see the greenery, the beauty of nature, nothing.

When I went to so many countries, you see, I had to with my husband I had to go and see beautiful places like museums. I never used to shop. But when I have so many children, then I have to shop, so I would go for shops. But not the way that every place is for shopping. What is there to shop here, when you have come here for your spiritual growth? In Mecca, do they have any shops? This is the holier than holy. Why should you go to these shops? I can't understand. I've told them not to have shops, but you people are the ones who encourage, who encouraged them, to make money out of us. Nothing essential to buy there. Now you have come to the holy occasion. Here you have come for your worship.

In our Mahalakshmi temple there are people who are selling garlands and things for the ladies' hair, but they say it is for the Goddess, and they buy there - all the people who are coming stupidly - and give it to the Brahmin in the temple. And the Brahmin sells it back at a lower price. And these garlands are, I don't know how many times, sold and bought and sold and bought because of the stupidity of the people who go there. If they have to take something, they should buy from outside, not at the place where you have come.

As it is you went to Delhi, you could have bought there, or you came to Bombay, you could have



bought there. But not in this place, we cannot make this place Bombay or Delhi, otherwise why should we come here? That's why Christ took a hunter and beat them, those who were selling things near the church. Now they don't have, I've seen, near the church they don't have. They have outside. But they sell other things. Like Catholic Church sells a wine called Benedictine, imagine.

That's another story. Christ went for a wedding and they had no wine. Now in the Hebrew language wine means the juice of the grapes. It doesn't mean fermented. So He converted water into that wine. You cannot convert water instantaneously into wine. Wine has to rot, has to smell. The more it smells the best it is. But they think that Christ said you must drink this thing. He never said that. He just converted it into wine, meaning the taste of the juice of grapes.

Once I went to some television, and there was a very nice man, in Italy. He said, "Mother You first give me Realization."

So I said, "Get some water."

I put My hand into it. "Now you drink it."

He said, "It is tasting like wine."

I said, "This is what Christ did." He got his Realization.

Instantaneously you cannot make wine. But if somebody dies they will drink. If somebody is born, they will drink. At any cost, without drinking they are not normal. But the people who got Realization have suddenly changed. They don't want to drink, they have stopped drinking, their attention has become nice, the whole thing is changed. This is the transformation that has worked, of which Christ has talked, Mohammed Sahib has talked, everybody has talked about this particular time when people will get transformed. But even after transformation, you do not want to become what you have to be, for which you have come here. You'll be left behind.

There's a big transformation is taking place. In that transformation also your rising is taking place. There's a big evolution going on, and those who will not evolve properly will be left behind. As it is said that this is the last judgment and you'll be judged, you'll be left behind. You cannot adhere to people who are rising higher. With your weight you'll fall down.

So, for you to understand Christ is all these qualities you must have. If you are hot-tempered, all right, go and beat yourself with shoes. But if you're not, then you need not. You must know what you are. First of all introspect. Accordingly you should work it out, but this ritualism is not allowed in Sahaja Yoga all the time.

I would love all my children to be extremely loving and collective. Not to denounce anybody for no rhyme and reason. And if you have to denounce, you should tell Me. I know what is what. Without asking Me you should not measure up somebody and say, "I've measured somebody." With what? What is your yardstick? You yourself, you are caught up in the web of ego. You cannot condemn anyone without telling Me. You have to tell Me. Don't worry, that this will disturb Me, or anything, but you should ask. I know about everyone. Maybe I've not met that person, but I can feel the vibrations.

You can write to Me. Many people just telephone. That's not the way. You must write to Me, because I read each and every letter. But all nonsensical letters you shouldn't write also to waste My time, like "My father's mother's mother this thing is sick, or is dead and her bhoot is moving about." All sorts of funny letters come to Me. What can I do for such people? That's not important. Or, "I need money, I have no money, I'm depending on You for money, so please send me money."

You can ask on My photograph. If you are a good Sahaja Yogi, you don't have to worry about money also. Or "I have no child, Mother, what to do, I want to have child." Those who have child, ask them what do they have else to say. So many have got children after coming to Sahaja Yoga, but you must deserve it.

So many miracles have taken place, so many people have been cured, no doubt. But that doesn't mean you have done it. Don't get into the trap of ego. That's most dangerous. If you destroy Sahaja

Yoga, you are destroying yourself.

So today you all have to promise in your heart. Put your hands to your heart and to say, "Mother, we'll love, we'll spread Your Divine Love, encompass the whole world, give Realization to all the people, we'll not shout, we'll not be angry, we'll not do the all kinds of rituals, but just surrender, surrender our ego to You." Surrender it, surrender your ego. All your problems can be solved, because as long as there is ego this Divine Power doesn't take over. You may do anything, you are not connected, your connection is missing. Christ is missing, He's no more there. To establish Him, first of all you must show how you love. But that doesn't mean that you love your wife, love your children and love your house. You have to love everyone. Try to make everyone happy.

That's why I like music, because through music you can spread vibrations. It's a very good media of spreading vibrations, of loving vibrations. But those who are musicians have to be loving people. Not hot-tempered, not showing off, not thinking too much of themselves. All this will work very well if we understand that this Divine Power is so powerful. No doubt it is love, no doubt it is truth. No doubt if you get out of it you'll be caught up by anything and you could be finished. It is a very, very powerful, effective, and absolutely conclusive power you have within yourself. And thanks to Christ that crucified Himself, sacrificed His body for our sake, that our Agnya is opened, otherwise I could not have done this Sahaja Yoga. But in this area we have Buddha, Christ and Mahavira. And They had to do tapasya, tapaha. They did it. You don't have to do now. They have done for you.

Now see, I saw the musicians yesterday. In two, three months they have learned so much. Otherwise, formerly all the musicians I knew, for Indian music had to really starve. For months together they had to practice, years together they had to bow to their guru. That's all over now, because of this Paramachaitanya, and your power to be one with the Divine. This Divine Power can transform you completely to such an extent that anything that you want to do, you can do it in two, three months.

In Pune when they were singing once - "foreigners" as we call them with respect. In India "foreigners" means respect, not like other countries. So they were singing. There were some very great musicians had come and they told Me, "Mother, we put down our head to them because how could these people, who don't know a word about Indian music, have learned it so well? And the pronunciation of this Marathi language is very difficult, but they are so good at it, it's very surprising. Now all this has happened in Your presence, in Your presence."

It's nice you have balloons here, to celebrate Christ's birthday and all these balloons in your head of ego should be burst, should be finished.

I'll be happy if you could learn Hindi language. Well, I know My English may not be so good, but best is to learn Hindi, if possible. Because there are already fourteen languages in India and so many languages in another country. Every country has a different type of English language. If you go to America, I don't understand their English for at least two, three days because they go on, taking their tongue and the lips on one side, then on another side. English of the French is another point. So best is to learn Hindi, and that to a good Hindi, not Sanskritized, but as they say day-to-day Hindi, because I feel better if you all understand what I'm saying. It's not difficult because you are all Sahaja Yogis, you can learn Hindi in no time. I'm not saying learn Sanskrit, but Hindi is very easy. It's not My Mother tongue. I've never studied Hindi language, never, but you see it's a very easy language to learn. But, as My Father told Me, never teach Hindi language to an English man.

I said, "Why this advice?"

He said, "There was an Englishman who was after me that I should teach him Hindi. So he said, 'I have to tell my servant to open the door, or to close the door.' So for open the door," he said, "You say, 'There was a cold day. Means darwaza khol dey. And for closing the door you have to say, 'There was a banker'. Mane darwaza band kar.'"

But now it's different. They'll pick up Hindi very quickly, very quickly, I can see that. If they can

learn this horrible Indian classical music which is so difficult so easily, what will happen? They can learn Hindi in no time, and make Me happier with that, not because Hindi is My language - it's not, it's Marathi. But Marathi very difficult, I don't think you can learn Marathi, it's very precise. I think that it's one of the best languages to put down your ego. That's why Maharastrians are normally not egoistical because in their language there is built-in process. For example, somebody is boasting that "I've done this, I've done that." So in Marathi they will say, "Don't climb on a bush" or what we call the tree of channa which is so big as that. Then the person is finished. Like that there are many words by which you can put down the ego of the man on his face. So Marathi language has so many advantages, but I would not ask you to learn Marathi language, it's not so easy. But Hindi, you should. It is very easy, very easy. But you must know one thing - that in Hindi language, there is adab. Adab means modesty and respect. Respect, but more than respect, the style of saying things. Not Urdu, but Hindi of day-to-day talking, there is respect and a way to address others, to address others. All this will give you a kind of a more flexible vehicle to express your love. Because in Hindi language we can never translate "I hate you." We never say like that - "I hate you." [Mother says "I hate you" in Hindi] You cannot say it. To say to hate somebody is sinful. So they can never say "I hate you." Chastity is more in Marathi language, but it's a little hard because it has got such, as I told you, idioms which can correct you just there.

All this is just to request you now, if you can learn this music which is very difficult, you can always learn a simple Hindi language, which is very, very easy and very, very easy to talk.

There are so many things I would like you to know about Christ, but this is a short time in which I cannot tell you the way He had His own priorities. Though in the Bible He's not described fully, I should say, and whatever it might have been they have reduced it maybe, and the way they practice Christianity also is shocking. So one has to learn Christianity through the heart, no other way out, they should learn through the heart - Heart of Your Mother.

May God bless you.

# MARATHI TRANSLATION

## (English Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

मला आज हिंदीमध्ये बोलावे लागले कारण इथे आलेल्या लोकांमध्ये भारतीय लोक मराठी व उत्तर भारतातून आलेले खूप आहेत. मी त्यांना ख्रिस्तांवदल सांगत होते. ख्रिस्तांची शक्ति कोणती म्हणाल तर ती मुख्य म्हणजे प्रेम-शक्ति; त्यांच्याजवळ रागाचा तबलेही नव्हता कारण त्यांनीच प्रथम आज्ञा-चक्र उधडले. ज्या लोकांमध्ये गर्व (Ego) असतो. त्यांना स्वतःला तो जाणवत नाही. मग मला न विचारताही ते काहीतरी चुकीच्या गोष्टी करतात. दिल्लीमधील काही लोकांनी तसेच राश्यामधील काही योग्यांनी असाच मूर्खपणा केला आणि त्यांच्या चुका भयानक व सहजयोगाला मारक होत्या. पण तरीही परमेश्वराच्या राज्यात त्या खपवून घेतल्या जाणार नाहीत हे हि त्यांच्या डोक्यात शिरत नाही. तुम्हाला जे करावचे असले त्याबद्दल मला आधी तुम्ही कल्पना दिली पाहिजे, मला विचारले पाहिजे कारण त्यातून पुढे काय होणार आहे हे मलाच समजते. तुम्हाला ते ओळखू येणार नाही. कुणी तुम्हाला फसवणार असेल तर तुम्ही ते कसे ओळखणार? तुम्ही तितके संवेदनाक्षम असाल तर तुमच्या ते आधीच लक्षात यायला हवे होते. तसे झाल्यावर तुम्ही मला नुसते विचारले तरी असते. सहजयोग्यांमध्ये सुप्त अहंकारामुळे हाच एक दोष असतो. कुणा एकाला लीडर बनवले तर त्याच्या बायकोचा अहंकार वाढतो. अहंकार ही फार अवघड गोष्ट आहे; त्याच्यामुळे सहजयोग्याचेही बरेच वेळा नुकसान होते. म्हणून असल्या काही गोष्टी करण्याच्या आधी मला विचारत चला; मी अजून जिवंत आहे म्हणून तुम्ही माझ्याशी बोलून, निदान टेलिफोन करून विचारत जा म्हणजे मी योग्य ते सांगेन.

त्याचबरोबर तुमचे संतुलन आणि तुमची प्रेमशक्ति इकडे लक्ष द्या. या परमचैतन्याकडूनच सर्व होणार आहे. परमात्म्याच्या सर्वव्यापी प्रेम-शक्तीमधूनच तुम्हाला हा विवेक आणि क्षमता प्राप्त होणार आहे. माझ्याशी कुणी टेलिफोनवर नुसते बोलू लागला की लगेच मला त्याला काय त्रास आहे हे समजते. तुम्हीही माझ्यासारखे जा असे मी म्हणत नाही पण तुम्ही व्हायब्रेशन्सचा उपयोग करायला शिका. स्वतःची व्हायब्रेशन्सही पहात चला. म्हणजे तुम्ही कुठल्या बाजूला चालता आहात हे तुमचे तुम्हालाच समजेल. फोटोसमीर हातावर कागद टेकून बसले तरीही हे लक्षात येईल.

या अहंकाराबद्दल आणखी एक गोष्ट बघू. तुम्ही सहजयोगात कशासाठी आलात? तुम्हाला लीडर बनवावे किंवा

राजा बनवावे अशी अपेक्षा धरून आलांत का? तुम्ही गुरुपद मिळवण्यासाठी इथे आला आहात. "गुरुपद दीजिये" म्हणायचे तर आधी सहजयोग्यामध्ये तुम्ही पूर्णपणे विनम्र व संतुलित व्हायला हवे. हेच ख्रिस्तानी सांगितले. त्यांच्या काळात लोकांना इतका अहंकार

नव्हता. ती सध्याच्या काळाचा मेंढरवाना आहे. लोकांना कशाचा अहंकार येईल सांगता येत नाही. मला एकदा एक महिला भेटली, तिचा अहंकार फार वाढला होता. मी मुलीला म्हटले, "ह्या बाईला काय झाले आहे, काय करते ती?" तर माझी मुलगी म्हणाली, "ती बाहुल्या बनवते." म्हणजे त्याचाच तिचा अहंकार होता! सहजयोग्यामध्ये येऊन उत्तम सहजयोगी बनण्यापेक्षा आणखी मोठे मिळवण्यासारखे काही नाही. मग तुम्ही राजा असा वा आणखी कुणी असा; आजकाल पंतप्रधानसुद्धा तुरुंगाच्या वाऱ्या करू लागलेत; तुमच्यासारखा विवेक त्यांच्यापाशी नाही, सुज्ञता नाही. तुमच्यामधील वैशिष्ट्य हे की तुमच्यामध्ये अहंकार नाही. लोक जोडेपट्टी वगैरे करून अहंकार घालवायचा प्रयत्न करतात किंवा आणखी काही ट्रोटमेंट्स करतात. पण हे सर्व मनामधून केले तर उपयोग होत नाही. उलट त्याचाच अहंकार वाढू लागतो. त्याचा परिणाम म्हणून तुम्ही कर्मकाण्ड-वादी बनता. सहजयोग्यांमध्ये असले प्रकार चालत नाहीत.

तुमचा स्वभाव प्रेमळ, कन्याळु आणि आस्थेवाईक असला पाहिजे. तसाच शिस्तप्रिय स्वभाव असावा, हे मुद्दाम सांगण्याचे कारण की कधी कधी प्रेमापोटी सहजोगाची शिस्त तुम्ही पाळत नाही. प्रेम करणे म्हणजे रोमिओ-ज्युलिएटचे प्रेम-प्रकरण नव्हे, शिस्त पाळतानाही तुम्ही संतुलन सांभाळले पाहिजे. शिस्त पाळायला आवडत नसेल तर तुम्ही चांगले सहजयोगी बनू शकणार नाही. ख्रिस्तांच्या चरित्रातून आपल्याला हेच शिकायचे आहे. कर्मकाण्डी स्वभाव, राग व क्रोध, कंजुषपणा या अनावश्यक सवयी सुटल्या पाहिजेत. कंजुषपणा म्हणजे पैसे कसे वाचतात इकडेच सारखे लक्ष; माताजी, काही सुट मिळेल का असा प्रश्न करणे. मी इथे कसला बिझिनेस करत नाही. वर्गणी कमी केली की भरपूर लोक येतात असा प्रकार नाही. तुमच्याच पैश्यामधून तुमच्यासाठीच आश्रम वगैरे बांधले जाणार आहेत. वाशीमधील सर्व वास्तू, दिल्लीमधील संबंध आश्रम, संबंध शाळा, आणखी दोन आश्रम, पुण्यामधील जमीन हे सर्व तुमच्यासाठी आहे. आता पुण्यामधील महाराष्ट्रियन लोक कंजुषपणाबद्दल प्रसिद्ध आहेत. त्यांना मी जमीन, आश्रम इ. सर्व करून द्यायला हवे म्हणजे मग ते तिथे जाऊन भजने म्हणणार! कंजुष माणूस कधीच प्रेम करू शकणार नाही. त्यांच्याकडे चांगले संगीत-कलाकार आहेत, पण वृत्ति कंजुषपणाची. कंजुष माणसे फक्त पैशावर प्रेम करतात. तसेच अहंकारी माणूसही कधी प्रेम करू शकणार नाही; कारण त्याचे लक्ष दुसऱ्यावर हुकूमत गाजवणारी सत्ता मिळवण्याकडे असते. त्यांना वाटेल की आपण हे सहजयोगासाठी करत आहोत पण त्यांत काही अर्थ नाही. तुम्ही स्वतःवर आणि तुमच्या अहंकारावर ताबा मिळवल्याशिवाय सहजयोगाचे कार्य करण्यापासून काही



साध्य होणार नाही. ख्रिस्ताकडे पहा; त्यांचा जन्म गोठ्यांत झाला, पण ते राजा होते; गोरगरिबांमध्ये राहून ते त्यांच्यासाठी झिजत राहिले, कुष्ठरोग्यांना त्यांनी आधार दिला, बऱ्याच लोकांना आजारापासून मुक्त केले. सहजयोगामध्येही हजारो लोक बरे झाले आहेत. पण तुम्ही दुसऱ्यावर आजार बरे होण्यासाठी कार्य करता तेव्हा ते तुम्ही करत नसून हे परमचैतन्यच ते कार्य करत आहे हे लक्षात ठेवणे महत्वाचे आहे. "मी काहीही करत नाही" अशी ठाम भावना असू दे. तेच सर्वात उत्तम. मी तशीच निष्कण्य आहे, पण मी आलशी नाही. तुम्ही पण कार्यरत असले पाहिजे पण ते सारे काही परमचैतन्याकडून होत राहू दे. सर्वप्रथम तुमचे प्रेम सर्वत्र पसरू दे, तुमचे हृदय विशाल होऊ दे. तुमचे घर, पैसा सर्व काही दुसऱ्यांना उपयोगी पडू दे. तुमची पत्नी इतरांना घरी येऊ देत नसेल तर तिची चूक आहे. तिला आस्थेवाईक व उदार असण्याचे महत्त्व समजावून सांगा. तिचे गोष्ट स्त्रियांनी पतीच्या बाबतीत करावी. हे फार महत्वाचे आहे. तुमचा स्वभाव उदार, कनवाळू, मनमिळाऊ आणि प्रेमळ व गोड असावा. ख्रिस्त एकदाच देवळात गेले आणि ते सुद्धा त्या देवळामध्ये लोकांनी बाजार मांडला होता म्हणून. इथेही तोच प्रकार आहे पण तुम्ही त्यांच्या दुकानात जायचेच नाही असे ठरवलेत तरी तो आपोआप बंद होईल. पण तुम्हाला नेहमी दुकानात जायची सवय जडली आहे म्हणून तुम्ही त्यांच्याजवळच्या वस्तु खरेदी करता. लोकांना त्यावाचून करमत नाही. निसर्गशोभा, तिरयळ, बहरलेले वृक्ष इ. गोष्टीकडे त्यांची नजर जात नाही. मला माझ्या पतीबरोबर बऱ्याच देशांत जावे लागायचे; पण मी तिथल्या म्युझिअमसाठी भेट द्यायचे, दुकानात कधीच जात नसे. आता मला खूप मुले आहेत म्हणून त्यांच्यासाठी शॉपिंग करावे लागते. पण इथे तुम्ही तुमची अध्यात्मिक उन्नती मिलावण्यासाठी आला आहान तर मग दुकानात कशाला वेळ घालवायचा? मक्का हे फार पवित्र स्थान मानले जाते पण तिथे दुकाने दिसत नाही. मी म्हणत राहते की इथे दुकानांना परवानगीच देऊ नका पण तुम्हीच त्यांना उत्तेजन देता आणि तुमच्याच पैशावर ते धंदा करतात. तुम्ही इथे पूजेसाठी आला आहात. आमच्याकडच्या महालक्ष्मी मंदिरात स्त्रियांसाठी माळा-फुले-वेण्या विकणारे खूप असतात. देवीला ते द्यायचे असतात म्हणून लोक मूर्खासारखे विकत घेतात आणि शंबटी ते सर्व देवळांतील ब्राम्हणांच्याच हातात जाऊन ती तेच पुन्हा कमी किंमतीला बाहेर विकतो. असे हे हार किती वेळा आत-बाहेर होत असतील कुणास ठाऊक. पण हे प्रकार लोकांच्या मूर्खपणामुळे चालतात; काही घ्यायचेच असेल तर बाहेर जाऊन विकत घेणे चांगले, जिथे आला आहात त्याच ठिकाणी कशाला घ्यायचे? आता तुम्ही दिल्लीला, मुंबईला गेला होता तर तिथेच काय ती खरेदी करायची; इथे येऊन दुकाने बघण्यात काही अर्थ नाही. म्हणूनच चर्चजवळ दुकाने मांडलेल्या लोकांना ख्रिस्तांनी चाबकाने मारले होते. आता चर्चजवळ दुकाने नसतात हे मला दिसते; पण जरा दूरवर इतर गोष्टींची विक्री चाललेली असते. उदा. कॅथॉलिक चर्चचे लोक दारू (Wine) विकतात. या दारूबद्दल ख्रिस्तांची एक कहाणी आहे; ते एका लग्नसमारंभाला गेले होते आणि तिथे वाइन आलेली नव्हती -

हेब्रू भाषेमध्ये द्राक्ष-रसाला वाइन म्हणतात - म्हणून ख्रिस्तांनी पाण्याचे वाइनमध्ये रूपांतर केले. तसे पाहिले तर पाण्याची एकाएकी वाइन बनू शकत नाही. पण लोक मानायला लागले की वाइन पिण्यास ख्रिस्तांची मना नाही. ख्रिस्तांनी जी वाइन बनवली ती म्हणजे पाण्याला दाक्षांची चव आणली. एकदा मी इटलीमध्ये टेलिझिजनच्या प्रोग्रामला गेले असताना एक मनुष्य भेटला व म्हणाला "श्री मांताजी मला जागृति द्या"; मी त्याला पाणी मागवायला सांगितले आणि त्या पाण्यात माझे हात धरले व ते त्याला पिण्यास सांगितले; त्यायल्यावर ते पाणी वाईनसारखे वाटले असे तो म्हणाला! हेच ख्रिस्तांनी केले असे मी म्हटले आणि त्याची कुण्डलिनी जागृत झाली. पण एरवी ते लोक कुणी मरण पावला तर वाइन पितात. कुणाचा जन्म झाला तर वाइन पितात; म्हणजे वाइन प्यायल्याशिवाय आपण साधारण माणूस आहोत असे त्यांना वाटतच नाही.

पण ज्यांना आत्मसाक्षात्कार मिळाला आहे त्यांच्यात ताबडतोब परिवर्तन झाल्याची अनेक उदाहरणे आहेत. अनेकांची दारू सुटली; त्यांचे चित्त स्थिर होऊ लागले, सर्व चांगले बदल होऊ लागले. हे परिवर्तन घडून येणे ही मोठी घटना आहे. ख्रिस्त, मोहम्मदसाहेब वगैरे अनेक धोर पुरूषांनी जनसामान्यांमध्ये परिवर्तन घडवणाऱ्या याच स्थितीबद्दल सांगितले होते. पण इतके होऊनही इथे येऊन काय मिलावायचे आणि उच्च स्थितीवर कसे यायचे इकडे तुम्ही लक्ष देत नाही. असे केलेत तर तुम्ही मागेच रहाल. फार वेगाने हे सर्व घटित होत आहे आणि त्यामध्येच तुमची उन्नति होत आहे. उल्कांतीच्या या मोठ्या टप्प्यावर तुम्ही जर काळजी घेतली नाही तर तुम्हीच मागे रहाल याचे भान ठेवा.

यालाच "लास्ट जजमेंट" (Last Judgement) चा समय असे म्हणूनच म्हटले आहे; तुमचीही परीक्षा होणार आहे आणि तुम्ही उन्नत लोकांच्या बरोबर टिकून राहिला नाहीत तर स्वतःच्याच चुकांमुळे तुमचे पतन होईल. म्हणून ख्रिस्तांना समजून घेण्यासाठी तुमच्यामध्ये त्यांचे सर्व गुण उतरतील असे वागा. तुम्ही शीघ्रकांपी असाल तर स्वतःवर जोडेपही करा; नसाल तर त्याची जमूरी नाही. स्वतःला नीट ओळखण्यासाठी आत्मपरीक्षण करत रहा; त्यानुसार सहजयोग करा. सहजयोगात कर्मकाण्ड नाहीत. मला माझी मुले अत्यंत प्रेमळ अंतःकरणाची आणि सामूहिकता वृद्धिंगत करणारी असावीत असे वाटते; त्यांनी ऊट-बस दुसऱ्यावर टिका मुळीच करू नये; तसे काही दिसून आले तर मला सांगा. मला सर्व काही समजते. उगीच कुणावरही कसलेही मत, मला न विचारता, पसरवू नका. हा अधिकार तुम्हाला कुणी दिला? दुसऱ्याबद्दल मत बनवण्याचे काही मापदण्ड तुमच्याजवळ आहेत का?

आपल्याच अहंकारामध्ये तुम्ही स्वतःला जखडून ठेवले आहे. मला सांगितल्याशिवाय दुसऱ्यावर आरोप ठेवण्याची किंवा त्याला कमी लेखण्याची तुमची जबाबदारी नाही. मला सांगितलेच पाहिजे; त्याचा मला उगीच त्रास होईल याची काळजी करू नका. मी सगळ्यांना चांगले ओळखून आहे. मला एखादा भेटलेला नसला तरी व्यावस्थेअनुसार मला सर्व समजते. तसेच काही विशेष असेल तर



मला पत्र लिहून कळवा; नुसता टेलिफोन करू नका कारण तुमच्या अशा पत्रातील अक्षर-अनु-अक्षर मी वाचते, याचा अर्थ हा नाही की फालतू गोष्टीसाठी - माझे बडील आजारी आहेत, माझ्या आजोबांचे भूत माझ्या मागे लागले आहे, किंवा माझे पैसे संपले, मला पैसे पाठवा इ. - मला पत्र पाठवले तरी चालेल. तुम्ही चांगले सहजयोगी असाल तर तुम्हाला कधीच पैशाचा प्रश्न पडणार नाही, म्हणून प्रत्येक बाबतीत काही मागण्याआधी आपण स्वतःला त्यासाठी योग्य बनवले पाहिजे.

अनेक चमत्कार तुम्ही पहात आहात; अनेकांचे आज्ञे बरे होत आहेत. पण हे तुम्ही करत नाही; तसे समजून अहंकाराच्या सापळात अडकू नका. सहजयोगाला वाईटपणा आणाल, त्याचे नुकसान कराल तर तुम्हीच तुमचा सर्वनाश करून घ्याल, म्हणून आज मला तुम्ही सर्वांनी अगदी हृदयापासून बचन द्या, हृदयावर हात ठेऊन बचन द्या की "श्री माताजी, आम्ही सर्वांवर प्रेम करू, ईश्वरी प्रेम सर्वत्र पसरवू, सर्व जगाला आपलेसे करून घेऊ आणि जास्तीत जास्त लोकांना जागृती देऊ. आम्ही उद्धटपणे बोलणार नाही, कुणावर रागावणार नाही आणि सहजयोगामध्ये कर्मकांडांत अडकून न घेता, पूर्णपणे समर्पित होऊ. आम्ही आमचा सारा अहंकार आपल्या चरणाशी समर्पित करीत आहो." तुमचे सर्व प्रश्न सुटणार आहेत. पण जोपर्यंत तुमच्यामध्ये अहंकार शिल्लक आहे तोपर्यंत ही ईश्वरी प्रेमशक्ति तुमचा स्वीकार करणार नाही. तुमचे कार्य करणार नाही कारण तुम्ही काहीही केलेत तरी तुमचा संबंध (Connection) त्या शक्तिबरोबर अखंड राहिल्याशिवाय उपयोग नाही. म्हणजेच हे कनेक्शन नसले तर ख्रिस्तांनी तुमच्यामध्ये नसणार. त्यांना प्रस्थापित करण्यासाठी तुमची प्रेमशक्ति प्रवाही झाली पाहिजे, फक्त आपले पती-पत्नी, मुले व घर याबरोबरच नाही तर सर्व मनुष्यप्राण्यांवर प्रेम केले पाहिजे; सर्वांना सुख-अनंद दिला पाहिजे. म्हणून मला संगीत आवडते कारण त्यातून व्यायेश्मस वहात असतात. कलाकारसुद्धा प्रेमळ असला पाहिजे; तापट, दिव्याळ आणि स्वतःला फार मोठे समजणारा नसावा. हे परमचैतन्य फार शक्तिशाली आहे हे तुम्ही समजून घेतले तर सर्व कार्य होणार आहे. ही शक्ति म्हणजे प्रेम व सत्य आहे पण एकदा तुम्ही तिच्यापासून अलग झालात तर कसल्या ना कसल्या संकटात पडून तुमचा नाश होईल हेही खरे आहे! तुमच्यामध्येच प्रस्थापित असलेली अशी ही शक्ति फार बलाढ्य, परिणामकारक व निर्णयक्षम आहे.

ख्रिस्तांनी आपले प्राण देऊन बलिदान केल्यामुळे हे आज्ञाचक्र उघडले म्हणून आपण त्यांचे आभार मानले पाहिजेत. तसे झाले नसते तर मी हा सहजयोग देऊ शकले नसते. याच चक्रावर बुद्ध, ख्रिस्त व महावीर आहेत आणि त्यांना खूप तपस्या करावी लागली; तुमच्यासाठी त्यांनी तपस्या केली, तुम्हाला आता काहीच करावे लागले नाही.

मी काल संगीत-कलाकारांचा कार्यक्रम पाहिला. दोन-तीन महिन्यांत त्यांनी किती प्रगति केली! एरवी भारतामधील संगीतकारांना किती काळ कष्ट करावे लागले होते पहा. वर्षानुवर्षे गुरूची सेवा करत ते संगीत शिकत असत. पण या परमचैतन्यामुळे

ते सर्व आता सोपे झाले आहे. ही ईश्वरी शक्ति इतकी कार्यक्षम आहे की तुम्ही काहीही शिकायचे मनात आणले तर दोन तीन महिन्यांत ते मिळू शकाल. पुण्यामध्ये एकदा या पाश्चात्य कलाकारांचा गाण्याचा व भजनाचा प्रोग्रॅम झाला तेव्हा तिथे आलेले जाणकार गायक-वादक त्यांचे गाणे ऐकून थक्क झाले. हे सर्व तुम्ही प्रत्यक्ष घटत असलेले पहात आहात. तुम्ही आज ख्रिस्तांच्या जन्मदिवस म्हणून हे सुंदर फुगे लावले आहेत; तुमच्या अहंकाराचे फुगे मात्र सर्व फुटले-मिटले पाहिजेत.

तुम्ही हिंदी भाषा शिकलात तर मला फार आवडेल. मला बऱ्यापैकी इंग्रजे येते पण हिंदी भाषा शिकणे चांगले. भारतात चौदा भाषा आहेत, देशोदेशीच्या आवाषाण्या भाषा आहेत. तसे पाहिले तर प्रत्येक देशाची इंग्रजी भाषा वेगवेगळी असते. अमेरिकन लोकांचे इंग्रजी विचित्र आहे. दोन-तीन दिवस मला ते कळतच नाही, फ्रेंच इंग्रजी आणखी वेगळे. म्हणून सोपे हिंदी बोलणे शिकले पाहिजे. तुम्ही सहजयोगी असल्यामुळे तुम्हाला हिंदी लवकर येईल. हिंदी भाषा शिकायला फार सोपी आहे. माझे बडील म्हणत असत की इंग्लिश माणसाला कधी हिंदी शिकवू नये. पण तुम्ही हे अवघड संगीत इतक्या लवकर आत्मसात केले मग हिंदी का नाही येणार? माझी भाषा तशी मराठी, पण मराठी शिकायला त्यामानाने अवघड आहे. आपला अहंकार कमी करण्यासाठी मराठी भाषा फार चांगली कारण त्याच्या शब्दांत नेमके अर्थ असतात. मराठी माणसे अहंकारी नसतात. कुणी आढ्यतेने स्वतःचीच स्तुति करू लागला तर त्याला म्हणतात "हरभन्याच्या झाडावर चढू नकोस;" म्हणजे तो माणूस एकदम खजील होणार. पण मराठी जरा अवघड असल्यामुळे तुम्हाला मी मराठी शिकायला सांगत नाही. पण हिंदी शिकायला सोपी आहे. हिंदी भाषेत 'अदब' आहे, नम्रता व आदरपूर्वक इतरांशी बोलण्याची हिंदी भाषेची रीत फार छान आहे. ती शिकलात की तुम्हाला तुमचे प्रेम चांगल्या तऱ्हेने व्यक्त करता येईल. म्हणून "I hate you" हे म्हणायला हिंदी भाषेत शब्द नाहीत, "घृणा करता हूँ" असे भाषांतर कुणीच करणार नाही. हे एवढे सांगायचे कारण म्हणजे तुम्ही जर हे अवघड संगीत इतक्या लवकर आत्मसात केले आहेत तर ही साधी-सुधी हिंदी भाषा तुम्हाला अगदी लवकर शिकता येईल इतकी ती सोपी आहे.

ख्रिस्तांबद्दल आणखी कितीतरी सांगण्यासारखे आहे. पण वेळ थोडा असल्यामुळे ते जमणार नाही. ख्रिस्तांनी जीवनातील प्राधान्य गोष्टींकडे कधीच दुर्लक्ष केले नाही तर त्या गोष्टी जावीवपूर्वक पाळल्या. बायबलमध्ये त्यांचे खरे व पूर्ण वर्णन केलेले नाही आणि जे लिहिले आहे तेही बराचसा भाग चगळून लिहिले आहे. आजकाल ज्या तऱ्हेने ख्रिश्चन धर्माचे आचरण केले जाते तो एक भयानक प्रकार आहे, विटंबना आहे. म्हणून ख्रिस्तांचा धर्म हृदयातून पाळला गेला पाहिजे; तुमच्या आईच्या हृदयातून तुम्ही ते शिका.

परमेश्वराचे तुम्हाला अनंत आशिर्वाद.

●●●